19 / 10 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

चैतन्य तारामंडल के श्रृगार और
वफादार, सपूत बच्चे होने का अनुभव

➢➢ मैं चैतन्य सितारा हूँ

➳_ ➳ जगमगाती हुई मणि हूँ

➳_ ➳ मैं प्रकाश स्वरूप आत्मा हूँ

→ मुझ से अनवरत रूप से

→ प्रकाश ही प्रकाश फ़ैल रहा है

◆ ज्ञान सूर्य बाबा

◆ मेरे सर पर

◆ छत्रछाया हैं

• मैं जगमगाता हुआ सितारा

• बाबा के तारा मंडल का

• श्रृंगार हूँ

➳_ ➳ इस तारा मंडल में

➳_ ➳ ज्ञान सूर्य मेरे शिव बाबा

➳_ ➳ ज्ञान चंद्रमा

→ ब्रह्मा माँ और

➳_ ➳ हर ब्राह्मण आत्मा

→ चमकता हुआ सितारा है

◆ सभी की चमक से

◆ यह तारा मंडल

◆ बहुत ही शोभनिक

◆ लग रहा है

➢➢ मैं गुणों के सागर बाबा की सन्तान हूँ

➳_ ➳ सर्व दैवी गुणों से सम्पन्न हूँ

➳_ ➳ बाबा ने मुझे सभी गुणों

➳_ ➳ और शक्तियों से

➳_ ➳ सम्पन्न कर दिया है

→ मैं महान आत्मा हूँ

→ गुणवान आत्मा हूँ

→ चैतन्य तारामंडल का श्रृंगार हूँ

◆ मैं शक्तिशाली आत्मा हूँ

◆ मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ

- इस रूहानी नशे में
- स्व्मान की सीट पर
- मैं स्थित हूँ
- अभिमान से मुक्त
- मैं आत्मा ईश्वरीय नशे
- में स्थित हूँ

➳_ ➳ स्वमान की सीट पर मैं

→ असीम सुख का

→ श्रेष्ठ स्थिति का

→ सदा सर्व प्राप्ति स्वरुप का

→ अनुभव कर रही हूँ

◆ मैं आत्मा अपने

◆ मीठे बाबा से

◆ मधुर मिलन मना रही हूँ

- हर कर्म में मैं
- फालो फादर कर रही हूँ
- ब्रह्मा बाप के नक़्शे कदम पर
- मैं चल रही हूँ

➳_ ➳ मेरे मन में हर पल

➳_ ➳ ख़ुशी के साज ही बज रहे हैं

➳_ ➳ खुशियों की खान से

→ मैं मालामाल हो रही हूँ

◆ मैं विशेष आत्मा हूँ

◆ औरो को भी विशेष आत्मा

- बना रही हूँ

➳_ ➳ मैं ज्ञान सूर्य और

→ ज्ञान चंद्रमा को

◆ फालो करने वाला

- बाबा का वफादार
- सपूत बच्चा हूँ